International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
International Open Access Journal
ISSN No: 2456 - 6470 | www.ijtsrd.com | Volume - 2 | Issue – 1

वैदिक कालीन स्त्री शिक्षा

Dr. Santosh Kumar Sourtha
Associate Professor-Sanskrit, S.N.K.P. Govt. P.G. College, Neem Ka Thana, Sikar, Rajasthan, India

सार
वैदिक काल में नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था । ज्ञान और शिक्षा में वे किसी भी प्रकार पुरूषों से कम नहीं थे। ऋग्वेदिक काल में पुत्र की भाँति पुत्री का भी उपनयन संस्कार होता था। ऋग्वैदिक काल में नारी को ऋषि बनने की भी पुरूषों की भाँति ही छूट थी । वेदों में उल्लिखित कुछ मन्त्र इस बात को रेखांकित करते हैं कि कुमारियों के लिए शिक्षा अपरिहार्य एवं महत्वपूर्ण मानी जाती थी । स्त्रियों को लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की शिक्षाएँ दी जाती थी । गोभिल गृहसूत्र में कहा गया है कि अशिक्षित पत्नी यज्ञ करने में समर्थ नहीं होती थी । संगीत शिक्षा पर जोर दिया जाता था ।इच्छा और योग्यता के अनुसार शिक्षा प्राप्ति के लिए श्रमणक्रमणिका में उल्लेखित प्राचीन परम्परा के अनुसार ऋग्वेद की रचना में 200 स्त्रियों का योगदान है ।

परिचय
शकुन्तला राव शास्त्री ने इन्हें तीन कोटियों में विभाजित किया है- (1) महिला ऋषि द्वारा लिखे गये श्लोक, (2) आंशिक रूप से महिला ऋषि द्वारा लिखे गये श्लोक एवं (3) महिला ऋषिकाओं को समर्पित श्लोक । ऋग्वेद के दशम मंडल के 39वें एवं 40वें सूक्त की ऋषिका घोषा, रोमशा, विश्ववारा, इन्द्राणी, शची और अपाला थीं ।[1,2]

वैदिक युग में स्त्रियाँ यज्ञोपवीत धारण कर वेदाध्ययन एवं प्रात: - सायं होम आदि कर्म करती थी । "शतपथ ब्राह्मण" में व्रतोपनयन का उल्लेख है । हरित संहिता के अनुसार वैदिक काल में शिक्षा ग्रहण करनेवाली दो प्रकार की कन्याएँ होती थी – ब्रह्मवादिनी एवं सद्योदबाह । ब्रह्मावादिनी जीवन भर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर अविवाहिता रहतीं थीं और धर्मशास्त्रों के अध्ययन में ही अपना अधिकतर समय व्यतीत करती थीं और सद्योदबाह 15 या 16 वर्ष की उम्र तक, जब तक उनका विवाह नहीं हो जाता था, तब तक अध्ययन करती थी । इन्हें प्रार्थना एवं यज्ञों के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण वैदिक मंत्र पढ़ाए जाते थे तथा संगीत एवं नृत्य की भी शिक्षा दी जाती थी ।[3,4]

वस्तुत: कन्याओं के लिए पृथक् पाठशालाएँ न थीं । जिन कन्याओं को गुरुकुल में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होता था वे पुरुषों के साथ ही अध्ययन करती थीं । उत्तर रामचरित में वाल्मीकि के आश्रम में आत्रेयी अध्ययन कर रही थी । भवभूति ने `मालती माधव' (प्रथमांक) में कामन्दकी के गुरुकुल में अध्ययन करने का वर्णन किया है । किन्तु ये उदाहरण बहुत कम हैं । अधिकतर गुरुपत्नी, गुरुकन्या अथवा गुरु की पुत्रवधू ही गुरुकुल में रहने के कारण अध्ययन का लाभ उठा पाती थीं । वस्तुत: शास्त्रों के अनुरोध पर कन्याओं की शिक्षा गृह पर ही होती थी ।[5,6]

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

किसी भी देश या समाज के विकास मापकों को महिलाओं और बच्चों की स्थिति ही स्पष्ट करती है। क्योंकि बच्चा जहां देश का भविष्य है वहीं स्त्री उसकी पहली शिक्षिका, पोषिका और दिग्दर्शिका है लेकिन वर्तमान समय में तमाम प्रयायों के बावजूद देश में महिलाओं और बच्चों की स्थिति बेहद चिंताजनक है। वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र संघ या यूनिसेफ जैसे अंतराष्ट्रीय संगठन जो आज भी अशिक्षा, निर्धनता और गरीबी के कारण कुपोषित जीवन जी रहे हैं बच्चों के स्वास्थ्य और उनकी शिक्षा के महत्व पर अपनी चिंता जता चुके है। किसी भी देश में परिवर्तन या क्रांति में शिक्षा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।[7,8] किंतु तमाम प्रयासों के बावजूद सेकेंडरी स्कूलों के दाखिले के मामले में हमारी स्थिति बेहद खराब है। हम इस मामले में केवल अफगानिस्तान और भूटान से ही बेहतर है। 2011 साक्षरता के अनुसार महिला साक्षरता की दर 65.46 प्रतिशत है फिर भी हम वैश्विक अनुपात 79.07 प्रतिशत से पीछे है। वहीं स्कुल छोड़ने की दर 83.5 प्रतिशत है बेहद उच्च है। ये भारतीय समाज के लिए बेहद चिंताजनक है क्योंकि हम उस समाज में निवास कर रहें है जहा बच्चों के पालन-पोषण कि जिम्मेदारी बहुत हद तक माँ कि होती है। ऐसे में हम अपनी आने वाले पीढ़ी को क्या देंगे जब माँ ही निरक्षर होगी। यहीं वजह है कि हमने अपनी नई शिक्षा नीति का एक उद्देश्य यह निर्धारित किया है कि –"शिक्षा का उपयोग महिलाओं के स्तर को सुधरने के लिए किया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली महिलाओं के सशक्तीकरण में सकारात्मक हस्तक्षेपकर्ता की भूमिका अदा करेगी।" फिर भी हमें अभी महिला शिक्षा के क्षेत्र में बहुत से पड़ावों को पार करना शेष

है।उपर्युक्त कथन यह बताने के लिए काफी है कि महिला सशक्तीकरण एवं ज्ञानवान समाज के उदय में महिला शिक्षा का कितना महत्वपूर्ण योगदान है। [9,10]जहा हम आधुनिक समाज एवं आजादी के इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी नारी शिक्षा में शत-प्रतिशत तो दूर पुरूषों के समान स्तर पर भी नहीं पहुँच पाएँ है। जब हम वैदिक काल पर नजर डालते है तो हजारों साल पहले का समाज भी ज्यादा उन्नतीशील दिखाई देता है। जो जीवन को व्यर्थ नहीं मानता है बल्कि प्रवृत्ति मार्गी है जो जीवन के प्रति आशावादी एवं कर्मठ है। उनकी प्रार्थना की ऋचाएँ ऐसी है जो आदमियों के भीतर उमंग जगाती है, उनकी प्रार्थना लम्बी आयु, स्वस्थ शरीर, विजय, आनन्द और समृद्धि के लिए ही की जाती थी।[11,12]

विचार-विमर्श

हम सौ वर्षों तक जिएँ। हम सौ वर्षों तक अपने ज्ञान को बढ़ाते रहें। हम सौ वर्षों तक पुष्टि और दृढ़ता को प्राप्त करे। हम सौ वर्षों तक आनन्दमय जीवन व्यतीत करें।निश्चय ही ऐसे समाज में रहने वाली हर जाति, वर्ण, वर्ग एवं नारी को भी हर क्षेत्र में पर्याप्त स्वतंत्रता मिली थी। वैदिक समाज में हमें पर्याप्त सामाजिक गतिशीलता देखने को मिलती है। यहीं वजह है कि वैदिकयुगीन नारियाँ आज भी नारियों के लिए आदर्श बनी हुई है।वैदिक कालीन समाज में जब नारी की प्रस्थिति पर गौर करते है तो ज्ञात होता है कि परम्परागत रूप से भारत के इतिहास में विश्व के अन्य भू-भागों की तुलना में महिलाओं की प्रस्थिति उच्च थी। [13,14]भारतीय धर्म का छोड़कर विश्व का कोई भी धर्म स्त्री को इतनी अधिक प्रधानता नहीं देता। इसका सुन्दर उदाहरण है हिंदू विवाह पद्धति। भारतीय हिंदू संस्कृति में विवाह को एक धार्मिक कृत्य माना है। विवाह में कन्या पक्ष की ओर से कन्यादान किया जाता है जो दर्शाता है कि लड़का पक्ष याचक है और लड़की पक्ष दाता है और दाता पक्ष हमेशा याचक से बड़ा होता है। इसी प्रकार का एक अन्य उम्दा विचार धर्मशास्त्रों में देखने को मिलता है कि परमात्मा ने इस संसार के दो भाग करके एक पुरूष और दूसरा स्त्री बनाया अर्थात् स्त्री और पुरूष को समान स्थान प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त अर्द्धनारीश्वर की जो कल्पना की गई है, वह बताती है कि स्त्री-पुरूष के मिलन से ही मानव जीवन का विकास हुआ है। यह इस बात की ओर भी संकेत करता है कि नर-नारी पूर्ण रूप से समान हैं उवं उनमें एक के गुण दूसरे के दोष नहीं हो सकते।[15,16]

उपरोक्त कथनों से सिद्ध होता है कि वैदिक कालन समाज एक प्रगतीशील, आशावादी समाज था जहा नर-नारी को समान स्थान प्राप्त था। वैदिक कालीन प्रगतीशीलता के लिए बहुत हद तक वहाँ की उन्नतिशील शिक्षा व्यवस्था उत्तरदायी थी। प्राचीन शिक्षा का उद्देश्य- शिष्य का सर्वांगीण विकास, उसकी ज्ञान ज्योति को प्रबुद्ध करना, उसे प्रखर से प्रखर बनाना और उसके जीवन को सर्वथा सौभाग्यशाली बनाना था। विद्या के साथ ही व्युत्पत्ति (सुमति, विवेक) का भी समन्वय हो, अतः कहा गया है कि सरस्वती के साथ धी (विवेक) हो। यहीं विवेक, तर्क ही आधुनिक सभ्यता का आधार बिन्दु है जो हमें वैदिक सभ्यता में परिलक्षित होता है। वेदों में कहा भी गया है- सा विद्या या विमुक्तये अर्थात् शिक्षा व्यक्ति को उदार बनाती है। संभवतः यहीं कारण था कि वैदिक काल में बाल विवाह, पर्दा प्रथा एवं सती प्रथा जैसी बुराईया प्रचलित नहीं थी। वे उत्सवों तथा यज्ञों में भाग लेती थी। उन्हें पर्याप्त स्वतंत्रता प्राप्त थी। शिक्षा के महत्व को देखते हुए ही वेदों में स्त्री शिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है। वेदों में शिक्षा को आश्रम-व्यवस्था एवं सोलह संस्कारों के साथ जोड़ा गया है। औपचारिक शिक्षा उपनयन संस्कार के साथ प्रारंभ होती है और इसी के साथ ब्रह्मचर्य आश्रम भी प्रारंभ होता था। शिक्षा उपनयन संस्कार के साथ आरंभ होकर समावर्तन संस्कार के साथ समाप्त होती थी। उपनयन संस्कार (जनेऊ धारण) शिक्षारम्भ का प्रतीक था। इस संस्कार के बाद शिष्य और शिष्याएँ वेद और शास्त्रों का अध्ययन करते थे। बालकों के समान ही बालिकाओं का भी यज्ञोपवित होता था। वे भी मेखला धारण करती थी। बालिकाओं को ललित कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। जिस प्रकार विवाह से पूर्व बालकों को ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था, उसी प्रकार बालिकाएँ भी ब्रह्मचारिणी रहती थी। वे भी मेखला धारण करती थी- उपर्युक्त उल्लेख हमें अर्थववेद में भी मिलता है, ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम् (11.5.17)। बालक स्नातक होने पर विवाह करते थे, कुछ आजीवन ब्रह्मचारी रहते थे। इसी प्रकार बालिकाएँ भी स्नातक होकर कुछ विवाह कर लेती थी, उन्हें 'सद्योद्वाहा' कहते थे और कुछ आजंम ब्रह्मचारिणी रहती थीं, उन्हें 'ब्रह्मवादिनी' कहा गया है। ये तपोमय जीवन बिताते हुए शास्त्रचर्चा में मग्न रहती थीं। ऐसी ब्रह्मवादिनी नारियों में गार्गी, मैत्रेयी उल्लेखनीय है।[17,18]

वैदिक शिक्षा पद्धति एवं स्वतंत्र तथा समतामूलक समाज का ही प्रभाव था कि वैदिक काल में कई विदुषी ऋचाओं की रचना की थी। वैदिक सूक्तों की रचना करने वाली महिलाओं की संख्या 20 से ज्यादा है, जो यह बताने के लिए पर्याप्त है कि वैदिक कालीन स्त्रीयों के स्थिति अच्छी थी। ब्रह्मवादिन ममता दीर्घतमा ऋषि की माता थी। ये महान् विदुषी और ब्रह्मज्ञानसम्पन्न थी। अग्नि के उद्देश्य से किया हुआ इनका स्तुती पाठ ऋग्वेदसंहिता के प्रथम मण्डल के दशम सूक्त की ऋचा में मिलता है। अत्रि महर्षि के वंश में उत्पन्न विश्ववारा ने ऋग्वेद के पाँचवे मण्डल के अठाइसवें सूक्त में वर्णित छः ऋचाओं की रचना की थी। ब्रह्मवादिनी अपाला ने ऋग्वेद के अष्टम मण्डल के 91वें सूक्त की एक से सात तक की ऋचाएँ इन्हीं की संकलित है। इसी प्रकार ब्रह्मवादिनी घोषा, एक प्रसीद्ध विदुषी थी। उन्होंने स्वंय ब्रह्मचारिणी के रूप में ब्रह्मचारिणी कन्या के समस्त कत्रव्यों का उल्लेख दो सूक्तों में किया है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 39 से 41वें सूक्त तक इस आख्यान का संकेत प्राप्त होता है। ब्रह्मवादिनी सूर्या ने ऋग्वेद के विवाह संबंधी सूक्त की रचना की है। जो ऋग्वेद के दशवें मण्डल के 85वें सूक्त की 47 ऋचाएँ इनकी है। वैदिक विदुषियों के इसी क्रम में ब्रह्मवादिनी वाक्र जो अम्भृण ऋषि की कन्या थी। ये प्रसिद्ध ब्रह्मज्ञानिनी थी और इन्होंने भगवती देवी के साथ अभिन्नता प्राप्त कर ली थी। ऋग्वेदसंहिता के दशम मण्डल के 125वें सूक्त में 'देवी सूक्त' के नाम से जो आठ मन्त्र हैं, वे इन्ही के रचे हुए हैं। चण्डीपाठ के साथ इन आठ मन्त्रों के पाठ का बड़ा महात्म्य माना जाता है। शिक्षा या ज्ञान व्यक्ति में आत्मविश्वास पैदा करता है तथा अपने अधिकारों व कत्रव्यों के प्रति सजग बनाता है। इन सभी

की अभिव्यक्ति तर्क एवं संवाद में होती है। स्त्री एवं पुरूष के मध्य तर्क एवं संवाद प्रगतिशील समाज का सूचक माना जाता है जो आज भी कई देशों अपितु विकसीत देशों में भी यथेष्ट नहीं दिखाई देता है। वैदिक कालीन स्त्री की विदुषिता होने का उदाहरण हमें उनके विद्धता भरे शास्त्रार्थ में दिखाई देता है। इसी प्रकार का उदाहरण बुहदारण्यक उपनिषद् में मिलता है। विदेह के राजा जनक के दरबार में याज्ञवल्क्य ऋषि से जहाँ अन्य ऋषिगण शास्त्रार्थ में पराजित हो रहे थे, वहीं सबसे तीक्ष्ण प्रश्न वाचक्रवी गार्गी (ऋषि वचक्रु की पुत्री होने के कारण) के तरफ से हुए यद्यपि में गार्गी ने भी याज्ञवल्क्य का लोहा माना। याज्ञवल्क्य को भी कहना पड़ा – "यह तो अतिप्रश्न है। गार्गी! यह उत्तर की सीमा है, अब इसके आगे प्रश्न नहीं हो सकता। अब तू प्रश्न न कर, नही तो तेरा मस्तक गिर जायेगा।" प्रस्तुत कथानक गार्गी की विद्धता एवं समाज में स्त्री की स्थिति को दर्शाता है। इस प्रकार का शास्त्रार्थ या दार्शनिक वार्तालाप केवल अविवाहित स्त्रियाँ ही नहीं करती थी बल्कि विवाहित स्त्रियाँ भी करती थी। ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी जो स्वंय विदुषी थी। मैत्रेयी का मानव जीवन की दशा एवं भौतिक जीवन की सीमा पर बेहद सुन्दर एवं गुढ़ प्रकुति को प्रश्नों को लेकर जो दार्शनिक संवाद है वह न केवल प्राचीन भारत अपितु आधुनिक विश्व के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। नोबेल विजेता एवं प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अर्मत्य सेन का भी मानना है कि याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी संवाद ने उन्हें विकास को देखने का एक भिन्न नजरिया दिया कि विकास एक विस्तुत अवधारणा है जो केवल जीडीपी एवं जीएनपी जैसे मानकों से नहीं मापा जा सकता है। इस प्रकार हम देख सकते है कि वैदिक भारत में नारी शिक्षा ने नारी को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[19,20]

वैदिक कालीन समाज में नारी की सशक्त भूमिका के पीछे वहाँ के कबीलाई समाज की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। जहाँ समता का भाव अधिक होता है। इसी प्रकार वर्तमान की कुछ जनजातियों को देखें तो इनमें आज भी महिलाओं की स्थिति पुरूषों की अपेक्षा काफी अच्छी है जैसे- गारों, खासी, लक्षद्वीपवासी, नायर आदि। खासी जनजाती में सबसे बुजुर्ग महिला ही परिवार की मुखिया होती है। इनमें वंश का निर्धारण मातृपक्ष से तथा सम्पत्ति का अधिकार माँ से केवल बेटी को ही प्राप्त होता है। भले ही वैदिक कालीन समाज मातृसत्तात्मक न रहा हो किंतु फिर भी समकालीन विश्व की अपेक्षा वैदिक महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। हर वस्तु को पाश्चात्य चश्में से देखने की हमारी आदत की वजह से हम छोटी-बड़ी वस्तु का विश्लेषण में यूरोपीयन मानक का ही प्रयोग करते है चाहे वह देश-काल में उपयुक्त बैठे या न बैठे। उपनिवेशवाद अपने साथ जो संस्कृति लेकर दुनिया के विभिन्न भागों पहुँचा वह सर्वग्रासी थी, इस बात को उपनिवेशवाद के शिकार लोग ही नहीं अपितु यूरोप के कुछ विवेकशाली व्यक्ति भी समझ रहे थे। इस संदर्भ में प्रसिद्ध जर्मन विचारक हर्डर ने 18वी सदी के अंतिम दशक में लिखा था, "भूमण्डल के हर हिस्से के लोग, जो विभिन्न युगों में नष्ट हुए हैं, वे युगों में इसलीए नहीं जीते रहे हैं कि अन्त में उनकी राख बने और उनकी भावी पीढ़ी यूरोप की संस्कृति से सुखी हो। यूरोप की संस्कृति की श्रेष्ठता का विचार प्रकृति की विभूति का अपमान है।" जब हम समकालीन यूरोप पर दृष्टी डालते है तों देखते है जब भारतवर्ष में स्त्री व पुरूष दोनों का गुरूकुल में शिक्षा का अधिकार प्राप्त था किंतु वहीं इसके विपरीत ग्रीक एवं रोमन सभ्यता में जहां अच्छे सार्वजनिक विद्यालय एवं जिम्नेशियम तो थे किंतु उनके द्वार महिलाओं के लिए खुले हुए नहीं थे। जिस समय भारतीय विदुषियाँ शास्त्रार्थ एवं तर्क कर रहीं थी तब सुकरात जैसे दार्शनिक का मानना था कि महिलाओं में पुरूषों से बौद्धिक प्रतिस्पद्र्धा करनें की क्षमता नहीं है।[21,22]

पृथ्वी के किसी भी देश या काल का समाज पूर्णतया समतामूलक रहा हो जहाँ कोई भेद न हो वह टामस मूर के यूटोपिया के अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं देता है। विषमताएँ तो सर्वत्र विद्यमान है कहीं प्रकृति जनित तो कहीं मानवजनित आवश्यकता तो है बस मानवजनित विषमताओं के उन्मूलन की एवं साथ ही देश-काल निरपेक्ष सिद्धांतों की खोज कर उन्हें आरोपित करने से बचने की। वैदिक कालीन समाज, शिक्षा एवं स्त्रियाँ एक आदर्श स्थिति का चित्र प्रस्तुत करते है। जिससे वर्तमान समाज को प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। ये महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को भी इंगित करता है। आधुनिक काल में भी शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए के.एम. पणिक्कर ने कहाँ हैं- "महिला-शिक्षा ने विद्रोह की उस कुल्हाड़ी की धार तेज कर दी है जिसने हिंदू सामाजिक-जीवन की जंगनी झाड़ियों को साफ करना संभव हो पाया है।"[23,24]

परिणाम

वैदिक काल में बेटे और बेटी के सामाजिक और धार्मिक अधिकारों में बहुत अंतर नहीं था। वैदिक शिक्षा प्रणाली और स्वतंत्र और समतावादी समाज का प्रभाव था कि वैदिक काल में कई विद्वानों के छंदों की रचना की गई थी। वैदिक भजनों की रचना करने वाली महिलाओं की संख्या 20 से अधिक है, जो यह बताने के लिए पर्याप्त है कि वैदिक काल की महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। ब्रह्मवादिनी ममता लंबे समय तक रहने वाली संत की मां थीं। यह महान विद्वान और ब्रह्म ज्ञानी थे। अग्नि के निमित्त उनका पाठ ऋग्वेदसंहिता के प्रथम मंडल के दसवें सूक्त के श्लोक में मिलता है। अत्रि महर्षि के वंश में पैदा हुए विश्ववारा ने ऋग्वेद के पाँचवें मंडल के अट्ठाईसवें सूक्त में वर्णित छह संस्कारों की रचना की। ब्रह्मवादिनी अपाला ने ऋग्वेद की अस्सी - आठ मंडलियों के 91 वें सूक्त के एक से सात तक के श्लोकों का संकलन किया है। [25,26] इसी प्रकार, ब्रह्मवादिनी घोष एक प्रख्यात विद्वान थी। उन्होंने ब्रह्मचारिणी कन्या के सभी कर्तव्यों का उल्लेख दो सूक्तों में दो ब्रह्मचारिणी के रूप में किया है। इस आख्यान का संकेत ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 39 वें से 41 वें सूक्त में मिलता है। ब्रह्मवादिनी सूर्या ने ऋग्वेद के विवाह पद्य की रचना की है। जो ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 85 वें सूक्त का 47 वाँ भजन है। वैदिक छात्रों के इसी क्रम में, ब्रह्मवादिनी वक्र, जो राजदूत ऋषि की बेटी थी। वह प्रसिद्ध ब्रह्म ज्ञानी थीं और भगवती देवी के साथ एकात्मता प्राप्त की। ऋग्वेद संहिता के दसवें मण्डल के 125 वें सूक्त में दंउम देवी सूक्त ' के नाम से आठ मन्त्रों की रचना हुई है। चंडीपाठ के साथ इन आठ मंत्रों का पाठ बहुत महान माना जाता है। शिक्षा या ज्ञान व्यक्ति में आत्मविश्वास पैदा

करता है और उसे उसके अधिकारों और कर्तव्यों से अवगत कराता है। ये सभी तर्क और संवाद में व्यक्त किए गए हैं। पुरुषों और महिलाओं के बीच तर्क और संवाद को प्रगतिशील समाज की निशानी माना जाता है, जो अभी भी कई देशों में नहीं बल्कि विकसित देशों में भी पर्याप्त है। वैदिक युग की विद्वान महिला होने का उदाहरण उनकी विद्वता की बहस में दिखता है। इसी तरह का उदाहरण बुधनारायणक उपनिषद में मिलता है। विदेह के राजा जनक के दरबार में, जहाँ ऋषि याज्ञवल्क्य के साथ वाद - विवाद में अन्य ऋषियों की हार हुई थी, वचक्रवी गार्गी (ऋषि वचरु की पुत्री होने के नाते) से सबसे अधिक तीक्ष्ण प्रश्न आया था, हालाँकि बाद के गार्गी में याज्ञवल्क्य को भी माना जाता था। लोहा होना। याज्ञवल्क्य का यह भी कहना था - " यह एक अतिशयोक्ति है। " गार्गी ! यह उत्तर की सीमा है, अब कोई और प्रश्न नहीं हो सकता है। अब तुम मत पूछो, अन्यथा तुम्हारा सिर गिर जाएगा। " प्रस्तुत कथानक गार्गी की पुरानीता और समाज में महिलाओं की स्थिति को दर्शाता है। इस प्रकार की बहस या दार्शनिक बातचीत न केवल अविवाहित महिलाओं द्वारा, बल्कि विवाहित महिलाओं द्वारा भी की जाती थी। मैत्रेयी, ऋषि यज्ञोपवीत की पत्नी जो एक आत्म - विद्वान थीं। मैत्रेयी का दार्शनिक संवाद मानव जीवन की दशा और भौतिक जीवन की सीमाओं पर सवाल बहुत ही सुंदर और गहरा है, यह न केवल प्राचीन भारत के संदर्भ में, बल्कि आधुनिक दुनिया में भी महत्वपूर्ण है। [27,28] नोबेल पुरस्कार विजेता और प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अर्मत्य सेन भी। यह मानना है कि याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के संवादों ने उन्हें विकास के बारे में एक अलग दृष्टिकोण दिया, यह विकास एक व्यापक अवधारणा है जिसे केवल जीडीपी और जीएनपी जैसे मानकों से नहीं मापा जा सकता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि वैदिक भारत में महिला शिक्षा ने सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जब हम वैदिक काल के समाज में महिलाओं की स्थिति पर विचार करते हैं, तो यह ज्ञात है कि परंपरागत रूप से भारत के इतिहास में, महिलाओं की स्थिति दुनिया के अन्य हिस्सों की तुलना में अधिक थी। भारतीय धर्म को छोड़कर, दुनिया में कोई भी धर्म एक महिला को इतनी प्राथमिकता नहीं देता है। इसका एक सुंदर उदाहरण हिंदू विवाह प्रणाली है। भारतीय हिंदू संस्कृति में विवाह को एक धार्मिक कार्य माना जाता है। विवाह में कन्यादान कन्या पक्ष की ओर से किया जाता है जिसमें दिखाया जाता है कि लड़का पक्ष याचिकाकर्ता है और लड़की पक्ष दाता है और दानदाता पक्ष हमेशा याचिकाकर्ता से बड़ा होता है। इस प्रकार का एक और उत्कृष्ट विचार शास्त्रों में पाया गया है कि भगवान ने इस दुनिया के दो हिस्सों को एक पुरुष और एक अन्य महिला में विभाजित किया है, अर्थात् महिला और पुरुष को समान स्थान देना। इसके अलावा, अर्धनारीश्वर की कल्पना की गई है, यह कहा जाता है कि मानव जीवन पुरुषों और महिलाओं के मिलन से विकसित हुआ है। यह यह भी इंगित करता है कि पुरुष और महिला पूरी तरह से समान हैं और उनमें एक के गुण दूसरे का दोष नहीं हो सकते।[29,30]

उपर्युक्त कथन यह साबित करते हैं कि वैदिक कालान समाज एक प्रगतिशील, आशावादी समाज था जहाँ पुरुष और महिला को समान दर्जा प्राप्त था। प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली वैदिक युग की प्रगति के लिए जिम्मेदार थी। प्राचीन शिक्षा का उद्देश्य शिष्य का सर्वांगीण विकास करना, उसकी ज्ञान ज्योति को जगाना, उसे दृढ़ बनाना और उसके जीवन को पूरी तरह से भाग्यशाली बनाना था। व्युत्पत्ति (सुमति, विवेक) को विद्या के साथ भी समन्वित किया जाना चाहिए, इसलिए कहा जाता है कि धी (विवेक) सरस्वती के साथ होना चाहिए। यह यहाँ है कि तर्क, तर्क आधुनिक सभ्यता का आधार है जो वैदिक सभ्यता में परिलक्षित होता है। वेदों में यह भी कहा गया है कि एक साधारण शिक्षा या मुक्ति का अर्थ है कि व्यक्ति एक व्यक्ति को उदार बनाता है। संभवतः यही कारण था कि वैदिक काल में बाल विवाह, पर्दा प्रथा और सती प्रथा जैसी बुराइयाँ प्रचलित नहीं थीं। वह त्योहारों और यज्ञों में भाग लेती थी। उसके पास पर्याप्त स्वतंत्रता थी। शिक्षा के महत्व को देखते हुए, वेदों में महिला शिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था दिखाई देती है। वेदों में शिक्षा को आश्रम व्यवस्था और सोलह संस्कारों से जोड़ा गया है। औपचारिक शिक्षा की शुरुआत उपनयन संस्कार और इसके साथ ही ब्रह्मचर्य आश्रम से होती है। शिक्षा की शुरुआत उपनयन संस्कार से हुई और समापन संवतारण संस्कार से हुआ। उपनयन संस्कार (जनेऊ पहनना) विद्या का प्रतीक था। इस संस्कार के बाद, शिष्यों और शिष्यों ने वेदों और शास्त्रों का अध्ययन किया। लड़कों की तरह लड़कियों की भी बलि दी जाती थी। वह भी मखमल पहनती थी। छात्राओं को ललित कला सिखाई गई। जिस तरह लड़कों को शादी से पहले ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था, उसी तरह लड़कियां भी ब्रह्मचारी थीं। उसने एक मेखला भी पहनी थी - हम ऊपर के अर्थवेद, ब्रह्मचर्य कन्या युवनाम विंदते पतिम (11.5.17) में भी उल्लेख करते हैं। बच्चों ने स्नातक स्तर पर शादी की, कुछ आजीवन ब्रह्मचारी थे। इसी प्रकार, लड़कियों ने भी स्नातक होने के बाद शादी कर ली, उन्हें ' सद्योदवाह ' कहा और कुछ आज़म ब्रह्मचारिणी रहीं, उन्हें ' ब्रह्मवादिनी ' कहा गया। वह तपस्या जीवन का आनंद लेती थी और शास्त्र चर्चा में तल्लीन थी। गार्गी, मैत्रेयी ऐसी ब्रह्मवादिनी महिलाओं में उल्लेखनीय हैं।[31,32]

निष्कर्ष

बेटे की तरह, बेटी के भी उपनयन संस्कार होते थे, जिन्हें शिक्षा की शुरुआत माना जाता था, लड़कियों की तरह, लड़कियों ने भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। यद्यपि उनके लिए बच्चों की तरह कोई अलग गुरुकुल नहीं थे, फिर भी महिला शिक्षा प्रचलित थी। वेदों के दौरान, माता - पिता की यह भी इच्छा थी कि उनकी बेटी पुजारी बने। ऋग्वेद में, लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, निववारी, विश्ववारा, आदि महिलाओं का उल्लेख है।

ऋग्वेद के पहले मंडल के 126 वें सूत्र के लेखक, रोमाशा को माना जाता है। संभवतः उनमें से कुछ शिक्षण कार्य भी करेंगे। उस समय महिलाएँ अपने पति के साथ यज्ञ में भाग लेती थीं। अतः, यह स्पष्ट है कि वैदिक मंत्रों के उचित पाठ के लिए, उन्हें वेध्याय भी करना चाहिए।[33,34]

ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी उपनिषद काल में परम विद्वान थीं। वह धन से अधिक ज्ञान की कामना करती है। बृहदारण्यक उपनिषद में उल्लेख किया गया है कि उसने याज्ञवल्क्य की दूसरी

पत्नी कात्यायनी के पक्ष में अपने संपत्ति के अधिकार को छोड़ दिया था और अपने पति से केवल आत्मज्ञान के लिए प्रार्थना की थी।

इसी प्रकार, बृहदारण्यक उपनिषद में विदेह के राजा जनक की सभा में गार्गी और याज्ञवल्क्य के बीच उच्च स्तरीय दार्शनिक बहस का उल्लेख है। इसके अलावा, तैत्तिरीय संहिता और मैत्रायणी संहिता में उल्लेख किया गया है कि संगीत, नृत्य और अन्य ललित कलाओं को भी सिखाया गया था।

प्रकाश के अनुसार, वीरमित्रोदय के संस्कार प्राचीन काल में दो प्रकार की लड़कियाँ थीं, पहली ब्रह्मवादिनी। ये महिलाएँ जीवन भर वेदों का ज्ञान प्राप्त करती थीं। बृहदारण्यक उपनिषद में दो ऐसे ब्रह्मवादियों का उल्लेख है।

1. याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी
2. गार्गी, जो याज्ञवल्क्य को पढ़ाती है। दूसरी बात यह है कि साधोवाहा ये महिलाएं शादी से पहले तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती थीं और शादी के बाद गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करती थीं।

वेद स्त्री को बहुत महत्वपूर्ण, गरिमापूर्ण, उच्च स्थान देते हैं। महिलाओं की शिक्षा का सुंदर वर्णन - वेदों में दीक्षा, शील, सदाचार, कर्तव्य, अधिकार और सामाजिक भूमिका दुनिया के किसी अन्य धर्मग्रंथ में नहीं मिलती है। वेद उसे घर की महारानी कहते हैं और देश का शासक बनने का अधिकार देते हैं, यहाँ तक कि पृथ्वी की महारानी भी। वेदों में, एक महिला बलिदान है, अर्थात् एक यज्ञ की तरह पूजा की जाती है। वेदों में, ज्ञान देने वाली महिलाएं, सुख - समृद्धि, विशेष गौरव, देवी, विदुषी, सरस्वती, इंद्राणी, उषा - जो सभी को जागृत करती हैं, आदि को कई सम्मानजनक नाम दिए गए हैं। वेदों में महिलाओं पर कोई प्रतिबंध नहीं है - इसे हमेशा विजयिनी कहा गया है और उनके सभी कार्यों में सहयोग और प्रोत्साहन की बात की गई है। वैदिक काल के दौरान, महिलाएँ युद्ध के मैदान में शिक्षण से चली गईं। जैसा कि कैकेयी महाराज दशरथ के साथ युद्ध में गई थीं। लड़की को अपना पति चुनने का अधिकार देकर, वेद पुरुष से एक कदम आगे रखते हैं।

कई ऋषिक वेद मंत्रों के द्रष्टा हैं - अप्पला, घोषा, सरस्वती, सरपरगिनी, सूर्या, सावित्री, अदिति - दक्षिणायनी, लोपामुद्रा, विश्वमित्र, आत्रेयी आदि। हालांकि, वे, जो वेदों में भी नहीं गए थे, जिनमें से कुछ भी बुद्धिहीन हैं। इस देश की सभ्यता, संस्कृति को नष्ट - भ्रष्ट करने और नष्ट करने का अभियान चला - वेदों में महिलाओं की अवमानना की।

वैदिक काल के दौरान, महिला एक उच्च स्थिति में थी, वह लंबे समय तक स्थिर नहीं रह सकती थी। धर्मसूत्रों ने बाल विवाह का निर्देश दिया, ताकि महिलाओं की शिक्षा बाधित हो और उनकी शिक्षा सामान्य स्तर पर आए क्योंकि उन्हें लिखने और पढ़ने के अवसर नहीं मिले, जिसके कारण वेदों के ज्ञान को असंभव बना दिया गया। उनके लिए धार्मिक समारोहों में भाग लेना वर्जित था। उसका मुख्य कर्तव्य अपने पति का पालन करना था। महिलाओं के लिए विवाह को अनिवार्य बनाया गया था। विधवा विवाह पर निषेध जारी किया गया था। बहुविवाह - प्रथा अधिक प्रचलित हो गई। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि महिलाओं की स्थिति वैदिक युग की तुलना में बाद के वैदिक काल में घटने लगी। स्मृति युग में, महिलाओं की स्थिति में अधिक अंतर था। स्मृति युग में, महिलाओं को केवल माता के रूप में सम्मान दिया जाता था, न कि पत्नियों के रूप में। इस युग में, विवाह की आयु को 12 या 13 वर्ष कर दिया गया था। शादी की उम्र कम होने के साथ शिक्षा कम होती गई। इस युग में महिलाओं के सभी अधिकार कम हो गए। स्मृतिकारों ने निर्देश दिया है कि किशोरावस्था के दौरान महिलाओं को स्वतंत्र नहीं रखा जाना चाहिए। एक महिला का परम कर्तव्य पति की परवाह किए बिना पति की सेवा माना गया। विधवाओं के पुनर्विवाह पर, गौहत्या निषेध लगाया गया था। सती को सर्वश्रेष्ठ माना जाने लगा।[35]

संदर्भ

1. रतिभानु सिंह नाहरः पूर्व - मध्ययुगीन सभ्यता और संस्कृति, पेज नंबर 683, 685 ।
2. ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद और महाभारत से
3. वी. डी. शुक्लाः पूर्व - मध्यकालीन संस्कृति और जीवन, पृ. 304 और पी. 309
4. वासुदेवशरण अग्रवालः भारतीय संस्कृति, पृष्ठ 96 और पृष्ठ 98
5. डॉ. एस कपूरः भारत में पुनर्जागरण, पृष्ठ सँख्या 36, 37 ।
6. कालीशंकर भटनागरः भारतीय संस्कृति का इतिहास, पृष्ठ सँख्या 38, 301, 308 ।
7. पी. वी. केनः धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग - 1,
8. महिला स्वतंत्र - मनुस्मृति - 4 / 3
9. त्रिपाठी, कुसुम, महिलाओं की दशा और दिशा। कुरुक्षेत्र। अंक, मार्च 2010 ।
10. महला, अरविंद और सुरेंद्र कटारिया - भारत में महिला सशक्तिकरणः प्रयास और बाधाएँ, मलिक एंड कंपनी। जयपुर। 2013. पी। 262 ।
11. दिनकर, रामधारी सिंह। संस्कृति के चार अध्याय
12. विमल कुमार, रामधारी सिंह दिनकर की रचना।
13. द्विवेदी, कपिल देव, वैदिक साहित्य और संस्कृति
14. गोयल, प्रीतिप्रभा, भारतीय विरासत
15. वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृष्ठ सँख्या 257-58
16. कुमार, कमलेश भारत की आदिवासी महिलाएं, कुरुक्षेत्र, 23 मार्च 2007, पृष्ठ सँख्या 23 ।
17. 17 पांडेय, प्रबंधक भारतीय समाज में प्रतिरोध की परंपरा, नई दिल्ली, 2013. पी। 9
18. टॉमस, मूर। आदर्शलोक

19. लेम्बी आरएच, सामाजिक संगठन लंदन, रैटलेज 1950
20. महाभारत १२ / ३३ ९ / ६
21. ऑल्टकर ए. एस ., प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, संशोधित संस्करण 196.
22. विद्यालंकार सत्यकेतु, प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन
23. अत्रि स्मृति, 4.140.41
24. पांडा प्रमोदिनी, वेद कालिन नारी शिक्षा, ओरिएंटल बुक सेंटर, दिल्ली।
25. त्रिपाठी, कुसुम. महिलाएँ दशा और दिशा. कुरूक्षेत्र. अंक, मार्च. 2007.
26. महला, अरविन्द और सुरेन्द्र कटारिया. सं. भारत में महिला सशक्तीकरणः प्रयास और बाधाए. मलिक एण्ड कम्पनी. जयपुर. 2013. पृ. 262.
27. दिनकर, रामधारी सिंह. संस्कृति के चार अध्याय
28. विमल, कुमार. रामधारी सिंह दिनकर रचना-संचयन.
29. द्विवेदी, कपिलदेव. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति
30. गोयल, प्रीतिप्रभा. भारतीय संस्कृति
31. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृ. 257-58
32. Amartya Sen. The Argumentative Indian. Farrar, Straus and Giroux, New York, 2005, p. 7
33. कुमार, कमलेश. भारत की जनजाति महिलाएँ. कुरूक्षेत्र. अंक. मार्च. 2007, पृ. 23.
34. पाण्डेय, मैनेजर. भारतीय समाज में प्रतिरोध की परंपरा. नई दिल्ली, 2013. पृ. 9
35. टॉमस, मूर. यूटोपिया

International Journal of Trend in Scientific Research and Development
IJTSRD
International Journal of Trend in Scientific Research and Development
ISSN: 2456-6470